AL- HAFEEZ COLLEGE, ARRAH.

ONLINE CLASSES

HISTORY LECTURES (PDF)

Dr. Md. Manjar Ali
Asst. Prof. Dept. of History
AL-Hafeez College, Ara.
Email: Manjar.ali18@gmail.Com.

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

गुलाम वंश (1206 ई० से 1290 ई०)

1. कुतुबुद्दीन ऐबक - 1206 - 1210 ई०
2. आरामशाह - 1210 - 1211 ई०
3. इल्तुतमिश - 1211 - 1236 ई०
4. रुकुनुद्दीन फिरोजशाह - 1236 — 1236 ई० (7 माह)
5. रजिया सुल्तान 1236 - 1240 ई०

कमजोर शासक:

6. मुईजुद्दीन बहरामशाह 1240 - 1242 ई०
7. अलाउद्दीन मसूदशाह 1242 - 1246 ई०
8. नासिरुद्दीन महमूद 1246 - 1266 ई०

9. गयासुद्दीन बलबन 1266 - 1286 ई०
10. कैकुबाद 1286 - 1290 ई०
11. कैमुर्स -

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

गुलाम - वंश - (1206 ई. से 1290 ई.)
THE SLAVE DYNASTY

डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने लिखा है कि भारत के प्रारम्भिक मुसलमान शासकों के सम्बन्ध में एक गलत धारणा चली आ रही है। 1206 ई. से 1526 ई. तक के समस्त युग को भ्रमवश "पठान युग" कहा जाता है, जबकि 1451 ई. तक के सभी शासक तुर्क थे। केवल एक लोदी-वंश, जिसने 1451 ई. से 1526 ई. तक शासन किया, पठान वंश था।

इसलिए इस युग को पठान युग नहीं वरन् सल्तनत युग (Sultanate age) कहा जाना चाहिए।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई. 1210 ई.)

- कुतुबुद्दीन ऐबक भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक भारत में इस्लामी साम्राज्य का संस्थापक था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक, ऐबक [illegible] नामक जाति का तुर्क था।
- वह मुहम्मद गोरी का गुलाम था। बाल्यकाल में ही उसे गुलाम बना दिया गया।
- 1192 ई० में वह मुहम्मद गोरी के भारतीय साम्राज्य का प्रतिनिधि शासक बन गया था।
- ऐबक की मुख्यालय इन्द्रप्रस्थ थी। गोरी की मृत्यु के बाद वह स्वतंत्र शासक बना।
- इन्द्रप्रस्थ को कुतुबुद्दीन ने मुख्यालय बनाया था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक का राज्याभिषेक 24 जून 1206 ई० को किया था।
- कुतुबुद्दीन ने अपनी राजधानी "लाहौर" में बनाई थी।
- सिंहासन पर बैठने के अवसर पर उसने खुद को "मलिक" और "सिपहसालार" कहा था न कि सुल्तान।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

- ऐबक ने अपने नाम के न तो सिक्के ढलवाए और न ही खुत्बा पढ़वाया।
- "हसन निजामी" फख़्र-ए-मुदब्बिर जैसे प्रसिद्ध इतिहासकारों को उसके दरबार में आश्रय प्राप्त था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को भारतीय इतिहास में "लाखबख्श" के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा इस लिए है क्योंकि वह महान दानी प्रवृत्ति का व्यक्ति था।
- प्रख्यात विद्वान "मिन्हाज" ने उसे महान दानशील होने के कारण उसे "हातिम द्वितीय" कहा है। चूंकि ईश्वर ने उसे इतनी अधिक दानशीलता प्रदान की थी जिसकी तुलना विश्व में पूर्व तथा पश्चिम में किसी भी शासक से नहीं की जा सकती।
- कुतुबुद्दीन एक महान सेनापति था। वह कुशल अश्वारोही, कुशल तीरन्दाज एवं साहसी सैनिक के सभी गुण विद्यमान था।
- भारत में पहली तुर्की मस्जिद "कुव्वत-उल-इस्लाम" मस्जिद
- कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण ।। ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया।

Notes: कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद 'दिल्ली' में है।

- "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" नामक मस्जिद का निर्माण ।। ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर शरीफ में करवाई।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

- "कुतुबमीनार" (दिल्ली) का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने की।
- ~~सूफी संत कुतुबुद्दीन ऐबक बख्तियार~~
- सूफी संत "कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी रःअः" की स्मृति में कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार की नींव रखी।

कुतुबुद्दीन ऐबक के समक्ष समस्याएं

जिस समय कुतुबुद्दीन ऐबक स्वतन्त्र शासक बना उसके समक्ष अनेक समस्याएं थी, जिनका समुचित समाधान किया जाना आवश्यक थी।

ऐबक की तत्कालीन समस्याएं निम्नलिखित थी।

1. **अमीरों की समस्या** :- ऐबक जब राजगद्दी पर बैठा तो उसके समकालीन अमीर उसे अपना सुल्तान स्वीकार के लिए तैयार न थे। यल्दौज, कुबाचा, तथा खिलजी सरदार उसकी अधिनता स्वीकार करना अपना अपमान समझते थे।

(2.) **हिन्दू राज्य** : हिन्दू राज्यो (चन्देल, गहड़वाल व प्रतिहारों) की शक्ति दमन करना उसके लिए आवश्यक था।

(3) **सीमा प्रान्तों की सुरक्षा** :- ऐबक के लिए आवश्यक था कि वह सीमा-प्रान्तों की सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध करे।

(4) **कुतुबुद्दीन के कार्य** :- कुतुबुद्दीन ने अपने चार वर्षीय अल्प शासनकाल में इन समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया, किन्तु उसके ये चार वर्ष अत्यन्त व्यस्त थे।

It's easy to be brave from a safe distance.

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

यल्दौज से संघर्ष -
कुतुबुद्दीन को सर्वप्रथम ताजुद्दीन यल्दौज का सामना करना पड़ा। गोरी के मृत्यु के पश्चात यल्दौज ने भी अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी तथा गजनी के स्वतंत्र शासक बन गया। कालान्तर में यल्दौज को गजनी से भागना पड़ा, जिसका लाभ उठाते हुए ऐबक गजनी पहुँचा तथा 1208 ई. में उस पर अधिकार कर लिया। ऐबक के शासन को गजनी की जनता ने पसन्द नहीं किया, अतः शीघ्र ही ऐबक को गजनी छोड़ना पड़ा। ऐबक के गजनी से लौट आने पर यल्दौज ने पुनः गजनी पर अधिकार कर लिया। यद्यपि गजनी में यल्दौज की सत्ता समाप्त न कर सका, किन्तु उसको भारत पर भी अधिकार नहीं करने दिया।

बंगाल में विद्रोह -
ऐबक के शासन काल के दौरान बिहार तथा बंगाल में विद्रोह हो रहे थे। ऐबक का पुत्र अलीमर्दान खाँ लखनौती का स्वतंत्र शासक बन गया था किन्तु खिलजी सरदारों ने उसे बन्दी बना लिया था। अलीमर्दान खाँ किसी प्रकार वहाँ से भागकर दिल्ली आया तथा ऐबक से सहायता माँगी।
अथक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप खिलजी सरदार ऐबक को अपना शासक मानने को राजी हो गये। अलीमर्दान पुनः बंगाल का शासक बन गया।

सिन्ध एवं मुलतान -
गोरी के पश्चात नासिरुद्दीन कुबाचा ने सिन्ध तथा मुलतान के प्रान्तों पर अधिकार कर लिया था। अतः ऐबक ने कूटनीति का सहारा लेते हुए

The soul has no rainbow if the eyes have no tears !!

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

अपनी बहन का विवाह नासिरुद्दीन से कर दिया ताकि वह बंगाल की स्थिति पर पूर्ण ध्यान दे सके। इस प्रकार अपने वैवाहिक सम्बन्धों का सहारा लेकर अपने शत्रु से सम्बन्धों को सुधारा।

इस प्रकार अपने चार-वर्षीय शासनकाल में ऐबक समस्याओं से ही घिरा रहा। 1210 ई० में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते हुए घोड़े से गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी।

Notes

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner